



नेपाली जन आक्रोश से मिलता सबक : लोकतंत्र, युवा असंतोष और सुशासन की चुनौती

विमल कुमार यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, कुंवर सिंह पीजी कॉलेज, बलिया.

e-mail : kumarvimal1947@gmail.com

Received: 12 May 2026 | Accepted: 20 May 2026 | Published: 25 June 2026

सारांश

सितंबर 2025 में नेपाल में उभरा युवा-नेतृत्व वाला जन आंदोलन समकालीन लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के सामने उपस्थित अनेक गंभीर प्रश्नों को रेखांकित करता है। 4 सितंबर 2025 को नेपाल सरकार द्वारा 26 सामाजिक माध्यम मंचों पर प्रतिबंध लगाए जाने के बाद विरोध प्रदर्शन व्यापक रूप लेने लगे। यद्यपि सामाजिक माध्यमों पर प्रतिबंध तत्काल कारण बना, किंतु आंदोलन की पृष्ठभूमि में भ्रष्टाचार, राजनीतिक संरक्षणवाद, आर्थिक असमानता, रोजगार के सीमित अवसर तथा शासन की जवाबदेही से संबंधित लंबे समय से निर्मित असंतोष भी मौजूद था। 8 सितंबर को सुरक्षा बलों की कार्रवाई में कम से कम 19 प्रदर्शनकारियों की मृत्यु हुई और सैकड़ों लोग घायल हुए। इसके अगले दिन हिंसा, आगजनी तथा सरकारी और निजी संपत्तियों पर हमले हुए। इस घटनाक्रम के बाद प्रधानमंत्री के. पी. शर्मा ओली ने पद से इस्तीफा दिया और नेपाल में अंतरिम राजनीतिक व्यवस्था स्थापित हुई। प्रस्तुत आलेख नेपाली जन आक्रोश को केवल एक तात्कालिक राजनीतिक घटना के रूप में न देखकर लोकतांत्रिक शासन, नागरिक आकांक्षाओं, सामाजिक-आर्थिक असमानता और सुशासन की व्यापक चुनौतियों के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। इसका केंद्रीय तर्क यह है कि लोकतंत्र की सफलता केवल चुनाव, संसद और राजनीतिक दलों की उपस्थिति से निर्धारित नहीं होती, बल्कि नागरिक गरिमा, समान अवसर, पारदर्शिता, सामाजिक न्याय, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और शासन की जवाबदेही से भी निर्धारित होती है। नेपाल का अनुभव दक्षिण एशिया की लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के लिए यह प्रश्न उपस्थित करता है कि यदि राजनीतिक संस्थाएं जनता की आकांक्षाओं से निरंतर दूर होती जाएं तो उनके प्रति विश्वास और वैधता कमजोर हो सकती है। भारत के संदर्भ में भी आर्थिक

असमानता, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सामाजिक विभाजन और सार्वजनिक संस्थाओं के प्रति विश्वास जैसे प्रश्नों पर गंभीर विमर्श आवश्यक है। अतः नेपाली अनुभव का प्रमुख संदेश यह है कि जन असंतोष को केवल कानून-व्यवस्था की समस्या मानने के बजाय उसके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारणों को समझना तथा समय रहते संस्थागत सुधार करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द : नेपाल, जन आक्रोश, युवा आंदोलन, लोकतंत्र, सुशासन, भ्रष्टाचार, आर्थिक असमानता, राजनीतिक उत्तरदायित्व, दक्षिण एशिया, सामाजिक माध्यम।

प्रस्तावना

नेपाल में राजतंत्र से लोकतांत्रिक गणराज्य तक की यात्रा लंबे राजनीतिक संघर्ष और व्यापक जन आकांक्षाओं का परिणाम रही है। राजशाही के अंत और गणराज्य की स्थापना के साथ नेपाली समाज, विशेषकर युवा पीढ़ी ने ऐसे भविष्य की कल्पना की जिसमें राजनीतिक समानता, सामाजिक न्याय, आर्थिक अवसर और नागरिक गरिमा सुनिश्चित हो। 2008 में राजशाही के औपचारिक अंत और गणराज्य की स्थापना के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था से लोगों की अपेक्षाएं और अधिक बढ़ीं। जनता को आशा थी कि राजनीतिक परिवर्तन के साथ शासन की प्रकृति भी बदलेगी और राज्य सामान्य नागरिक के जीवन में वास्तविक सुधार का माध्यम बनेगा। नेपाल का संवैधानिक विकास अनेक राजनीतिक परिवर्तनों से होकर गुजरा है। राणाशाही, राजतंत्र, पंचायती व्यवस्था, 1990 का लोकतांत्रिक परिवर्तन, माओवादी संघर्ष, 2006 का जनआंदोलन तथा 2015 का संविधान नेपाल की राजनीतिक यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ाव रहे हैं। इस दृष्टि से वर्तमान नेपाली राजनीतिक संकट को उसके दीर्घकालीन सामाजिक और संवैधानिक परिवर्तन से अलग करके नहीं देखा जा सकता। नेपाल का लोकतांत्रिक परिवर्तन केवल शासन प्रणाली में परिवर्तन नहीं था, बल्कि सामाजिक न्याय, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और नागरिक अधिकारों के विस्तार की आकांक्षा से भी जुड़ा हुआ था।

लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थिरता केवल संवैधानिक संस्थाओं की उपस्थिति पर निर्भर नहीं करती। लोकतंत्र तभी मजबूत होता है जब नागरिकों को यह अनुभव हो कि शासन उनकी समस्याओं को समझता है, राजनीतिक संस्थाएं उत्तरदायी हैं और सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग व्यापक जनहित में किया जा रहा है। यदि लोकतांत्रिक संस्थाओं और नागरिक जीवन के बीच दूरी बढ़ती जाती है तो असंतोष और अविश्वास की संभावना भी बढ़ती है। सितंबर 2025 की नेपाल की घटनाओं को इसी व्यापक संदर्भ में समझना आवश्यक है। 4 सितंबर को सरकार ने उन 26 सामाजिक माध्यम मंचों को अवरुद्ध करने का निर्णय लागू किया जो निर्धारित पंजीकरण प्रक्रिया का अनुपालन नहीं कर पाए थे। सरकार ने इसे नियमन और कर संबंधी अनुपालन से जोड़ा, जबकि आलोचकों ने इसे

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करने वाला कदम माना। इसके बाद युवाओं के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन तेजी से फैलने लगे। मानवाधिकार संगठनों और समकालीन रिपोर्टों के अनुसार भ्रष्टाचार और राजनीतिक अभिजात वर्ग के प्रति असंतोष पहले से ही आंदोलन की पृष्ठभूमि में मौजूद था।

इस आंदोलन को केवल सामाजिक माध्यमों के प्रतिबंध के विरुद्ध प्रतिक्रिया मानना इसके व्यापक सामाजिक आधार को सीमित कर देगा। युवा वर्ग में भ्रष्टाचार, राजनीतिक परिवारवाद, रोजगार के सीमित अवसर और आर्थिक भविष्य को लेकर असंतोष पहले से मौजूद था। सामाजिक माध्यमों ने इन भावनाओं को एक-दूसरे से जोड़ने तथा उन्हें सामूहिक राजनीतिक अभिव्यक्ति में बदलने का माध्यम प्रदान किया।

नेपाली जन आक्रोश के अंतर्निहित कारण

नेपाल का अनुभव बताता है कि व्यापक जन आंदोलन प्रायः किसी एक घटना से पैदा नहीं होते। कोई तात्कालिक निर्णय लंबे समय से जमा असंतोष को अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान कर सकता है। नेपाल में सामाजिक माध्यमों पर प्रतिबंध ने यही भूमिका निभाई। नई पीढ़ी के लिए इंटरनेट और सामाजिक माध्यम केवल मनोरंजन के साधन नहीं रह गए हैं वे सूचना, संवाद, सामाजिक पहचान और राजनीतिक सहभागिता के महत्वपूर्ण माध्यम बन चुके हैं। इसलिए इन मंचों पर प्रतिबंध का प्रश्न सीधे अभिव्यक्ति और नागरिक भागीदारी से जुड़ गया। प्रदर्शनकारियों की प्रमुख शिकायतों में भ्रष्टाचार और राजनीतिक संरक्षणवाद के प्रति असंतोष शामिल था। राजनीतिक नेताओं और उनके परिवारों के जीवन तथा सामान्य नागरिकों की आर्थिक कठिनाइयों के बीच दिखाई देने वाला अंतर सार्वजनिक चर्चा का विषय बना। युवाओं में यह भावना विकसित हुई कि राजनीतिक सत्ता और सार्वजनिक संसाधनों का लाभ सीमित समूहों तक केंद्रित होता जा रहा है। रोजगार के अवसरों की कमी और विदेशों में काम करने के लिए नेपाली युवाओं का निरंतर पलायन भी इस असंतोष की पृष्ठभूमि में रहा। समकालीन रिपोर्टों में भ्रष्टाचार, रोजगार और आर्थिक अवसरों की कमी को आंदोलन के महत्वपूर्ण कारणों से जोड़ा गया है।

यहां एक महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्न उभरता हैकृक्या लोकतंत्र केवल राजनीतिक प्रतिनिधित्व का नाम है या नागरिकों की सामाजिक और आर्थिक आकांक्षाओं की पूर्ति भी उसकी जिम्मेदारी है? यदि युवा मतदान करता है, राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेता है और लोकतांत्रिक व्यवस्था से बेहतर भविष्य की अपेक्षा करता है, लेकिन उसे रोजगार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मानजनक जीवन के पर्याप्त अवसर नहीं मिलते, तो उसके भीतर व्यवस्था के प्रति निराशा उत्पन्न हो सकती है। नेपाल में सितंबर 2025 का आंदोलन इसी निराशा के राजनीतिक रूपांतरण के रूप में देखा जा सकता है।

प्रारंभिक प्रदर्शन मुख्यतः युवा नेतृत्व में हुए और भ्रष्टाचार तथा सामाजिक माध्यम प्रतिबंध के विरुद्ध केंद्रित थे। 8 सितंबर की पुलिस कार्रवाई में कम से कम 19 लोगों की मृत्यु हुई और सैकड़ों लोग घायल हुए। इसके बाद 9 सितंबर को हिंसा और आगजनी की घटनाएं व्यापक हुईं तथा सरकारी भवनों, राजनीतिक व्यक्तियों से जुड़ी संपत्तियों, मीडिया संस्थानों और अन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बनाया गया।

इस घटनाक्रम को समझते समय शांतिपूर्ण विरोध और हिंसक गतिविधियों के बीच स्पष्ट अंतर करना आवश्यक है। सरकार की आलोचना, शांतिपूर्ण प्रदर्शन और नागरिक असहमति लोकतंत्र के वैध अंग हैं। इसके विपरीत आगजनी, लूटपाट, शारीरिक हमले और संपत्ति को नष्ट करना लोकतांत्रिक असहमति की स्वीकार्य पद्धति नहीं है। मानवाधिकार संबंधी जांचों के अनुसार 9 सितंबर की हिंसा में ऐसे लोग और समूह भी शामिल थे जिनका शांतिपूर्ण युवा आंदोलन से प्रत्यक्ष संबंध स्पष्ट नहीं था। इसलिए पूरे आंदोलन को हिंसक गतिविधियों के साथ समान रूप से जोड़ना उचित नहीं होगा। राज्य की भूमिका पर भी समान रूप से प्रश्न उठता है। नागरिकों के शांतिपूर्ण प्रदर्शन के अधिकार की रक्षा करना लोकतांत्रिक सरकार की जिम्मेदारी है। यदि सुरक्षा बल आवश्यकता से अधिक बल का प्रयोग करते हैं तो राज्य की जवाबदेही भी आवश्यक हो जाती है। मानवाधिकार संबंधी जांचों ने सितंबर 2025 की घटनाओं में सुरक्षा बलों द्वारा अत्यधिक बल प्रयोग की स्वतंत्र और पारदर्शी जांच की आवश्यकता पर बल दिया है।

लोकतंत्र, असमानता और सुशासन की चुनौती

इक्कीसवीं सदी में लोकतंत्र विश्व की प्रमुख राजनीतिक व्यवस्थाओं में से एक है। इसकी शक्ति नागरिक सहभागिता, राजनीतिक समानता और सत्ता परिवर्तन की संवैधानिक प्रक्रिया में निहित है। किंतु लोकतंत्र का संस्थागत ढांचा तभी प्रभावी रह सकता है जब उसके भीतर सामाजिक और आर्थिक न्याय के लिए पर्याप्त स्थान हो। आर्थिक असमानता लोकतांत्रिक राजनीति के सामने एक गंभीर चुनौती है। संपत्ति और संसाधनों का अत्यधिक केंद्रीकरण राजनीतिक प्रभाव की असमानता को भी जन्म दे सकता है। भारत के संबंध में उपलब्ध विश्व असमानता संबंधी आंकड़ों के अनुसार 2022–23 में देश की कुल संपत्ति का लगभग 40.1 प्रतिशत हिस्सा शीर्ष 1 प्रतिशत के पास था, जबकि निचले 50 प्रतिशत के पास लगभग 6.4 प्रतिशत संपत्ति थी। यह स्थिति लोकतांत्रिक विकास के साथ आर्थिक अवसरों के समान वितरण के प्रश्न को महत्वपूर्ण बनाती है।

आर्थिक असमानता केवल आय या संपत्ति के अंतर का प्रश्न नहीं है। इसका प्रभाव शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आवास, सामाजिक प्रतिष्ठा और राजनीतिक सहभागिता पर भी पड़ता है। जब समाज

का एक वर्ग गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक आसानी से पहुंच बना लेता है और दूसरा वर्ग मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करता है, तब लोकतंत्र के औपचारिक समानता सिद्धांत और सामाजिक वास्तविकता के बीच दूरी बढ़ सकती है। नेपाल में भी राजनीतिक सत्ता, आर्थिक अवसर और सामाजिक प्रतिष्ठा के असमान वितरण से संबंधित प्रश्न आंदोलन की पृष्ठभूमि में दिखाई दिए। राजनीतिक नेतृत्व के प्रति युवाओं की नाराजगी केवल किसी एक व्यक्ति या दल तक सीमित नहीं थी। यह उस व्यापक राजनीतिक संस्कृति के प्रति असंतोष था जिसमें जनता को लगता है कि सत्ता परिवर्तन के बावजूद शासन की कार्यशैली में अपेक्षित बदलाव नहीं हुआ।

सुशासन का अर्थ केवल भ्रष्टाचार का अभाव नहीं है। पारदर्शिता, जवाबदेही, विधि का शासन, नागरिक सहभागिता, प्रशासनिक दक्षता और सार्वजनिक संसाधनों का न्यायपूर्ण उपयोग इसके महत्वपूर्ण घटक हैं। किसी लोकतंत्र में यदि संस्थाएं पारदर्शी हैं, प्रशासन उत्तरदायी है और नागरिकों को न्याय पाने के प्रभावी अवसर उपलब्ध हैं तो असंतोष को लोकतांत्रिक संस्थाओं के भीतर ही अभिव्यक्ति मिल सकती है। लेकिन यदि संस्थागत रास्ते कमजोर दिखाई दें तो असंतोष सड़क पर अधिक तीव्र रूप में व्यक्त हो सकता है। युवा पीढ़ी की अपेक्षाएं भी बदल रही हैं। आज सूचना तक पहुंच पहले की तुलना में बहुत अधिक है। युवा अपने देश की परिस्थितियों की तुलना अन्य देशों से तत्काल कर सकते हैं। इससे शासन, रोजगार, शिक्षा, जीवन-स्तर और राजनीतिक अवसरों को लेकर उनकी अपेक्षाएं बढ़ती हैं। इसलिए आज की सरकारों के लिए केवल विकास के आंकड़े प्रस्तुत करना पर्याप्त नहीं है। उन्हें नागरिकों को यह अनुभव भी कराना होगा कि विकास के अवसर समाज के व्यापक वर्गों तक पहुंच रहे हैं।

नेपाल की घटना इस बात का संकेत देती है कि लोकतांत्रिक संस्थाओं को नागरिकों की नई राजनीतिक भाषा और नई अपेक्षाओं को समझना होगा। डिजिटल युग में राजनीतिक असंतोष अधिक तेजी से संगठित हो सकता है। इसलिए लोकतांत्रिक सरकारों के सामने चुनौती दमन और संवाद के बीच संतुलन बनाने की है। नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए डिजिटल दुष्प्रचार और गैरकानूनी गतिविधियों से निपटने के लिए पारदर्शी और विधिसम्मत व्यवस्था आवश्यक है।

दक्षिण एशिया और भारत के लिए नेपाली अनुभव

दक्षिण एशिया के विभिन्न देशों में हाल के वर्षों में युवा असंतोष और राजनीतिक परिवर्तन की घटनाओं ने यह प्रश्न उठाया है कि लोकतांत्रिक संस्थाएं नागरिकों की बदलती आकांक्षाओं के साथ किस प्रकार तालमेल स्थापित कर सकती हैं। नेपाल की घटना इसी व्यापक क्षेत्रीय संदर्भ का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसका अर्थ यह नहीं है कि नेपाल, भारत, श्रीलंका, बांग्लादेश या अन्य देशों

की परिस्थितियां समान हैं। प्रत्येक देश की ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि अलग है। फिर भी कुछ सामान्य प्रवृत्तियों को समझा जा सकता है। पहली प्रवृत्ति राजनीतिक प्रतिनिधित्व और नागरिक आकांक्षाओं के बीच बढ़ती दूरी है। नई पीढ़ी केवल चुनाव के समय राजनीतिक भागीदारी तक सीमित नहीं रहना चाहती। वह शासन की निरंतर निगरानी, पारदर्शिता और सार्वजनिक निर्णयों में उत्तरदायित्व चाहती है। डिजिटल माध्यमों ने इस आकांक्षा को अधिक प्रभावशाली बनाया है।

दूसरी प्रवृत्ति सामाजिक माध्यमों का बढ़ता राजनीतिक महत्व है। डिजिटल माध्यमों ने राजनीतिक संचार की गति को असाधारण रूप से बढ़ा दिया है। सरकारें अब केवल पारंपरिक माध्यमों से सार्वजनिक विमर्श को प्रभावित नहीं कर सकतीं। साथ ही सामाजिक माध्यमों पर गलत सूचना, अफवाह और उकसावे की संभावना भी रहती है। इसलिए लोकतांत्रिक चुनौती यह है कि ऑनलाइन क्षेत्र को उचित नियमों के अधीन रखते हुए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को भी सुरक्षित रखा जाए। नेपाल में 26 सामाजिक माध्यम मंचों पर लगाया गया प्रतिबंध इस संतुलन की कठिनाई को सामने लाता है। सरकार का तर्क नियमन और अनुपालन से जुड़ा था, लेकिन प्रतिबंध के राजनीतिक प्रभाव ने इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रश्न से जोड़ दिया। आंदोलन के बाद प्रतिबंध वापस लिया गया। इस पूरे घटनाक्रम ने यह प्रश्न उठाया कि लोकतांत्रिक सरकारों को डिजिटल माध्यमों को विनियमित करते समय नागरिक स्वतंत्रताओं की संवैधानिक सुरक्षा किस प्रकार सुनिश्चित करनी चाहिए।

तीसरी प्रवृत्ति भ्रष्टाचार और राजनीतिक परिवारवाद के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता है। युवा वर्ग यह अपेक्षा करता है कि सार्वजनिक पद व्यक्तिगत या पारिवारिक विशेषाधिकार का माध्यम न बनें। लोकतंत्र में राजनीतिक परिवारों का अस्तित्व अपने आप में लोकतांत्रिक उल्लंघन नहीं है, लेकिन सार्वजनिक पद, सरकारी संसाधन और अवसर यदि पारदर्शी तथा समान प्रक्रियाओं के बजाय व्यक्तिगत संबंधों पर निर्भर दिखाई दें तो राजनीतिक वैधता प्रभावित हो सकती है। भारत के लिए भी इन प्रश्नों का महत्व है। भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था का आकार, संस्थागत अनुभव और सामाजिक संरचना नेपाल से अलग हैं इसलिए दोनों की सीधी तुलना उचित नहीं होगी। फिर भी नागरिक आकांक्षाओं, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, भ्रष्टाचार, आर्थिक असमानता और प्रशासनिक जवाबदेही जैसे प्रश्न भारतीय लोकतांत्रिक विमर्श में महत्वपूर्ण हैं।

भारत में लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत करने के लिए युवाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण रोजगार, शिक्षा और कौशल के अवसरों का विस्तार आवश्यक है। सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था को मजबूत करना, प्रशासनिक पारदर्शिता बढ़ाना, भ्रष्टाचार पर प्रभावी नियंत्रण और सामाजिक न्याय की नीतियों को प्रभावी रूप से लागू करना लोकतांत्रिक विश्वास को मजबूत कर सकता है। इसके साथ ही

राजनीतिक दलों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। राजनीतिक दल लोकतंत्र और जनता के बीच मध्यस्थ संस्था होते हैं। यदि वे केवल चुनावी गणित तक सीमित हो जाएं और नागरिक समस्याओं से निरंतर संवाद न करें तो राजनीतिक दूरी बढ़ सकती है। राजनीतिक दलों को आंतरिक लोकतंत्र, पारदर्शी वित्तीय व्यवस्था और युवा सहभागिता को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

मीडिया की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। लोकतंत्र में मीडिया को सत्ता और जनता के बीच सूचना का महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है। नेपाल में आंदोलन के दौरान कुछ मीडिया संस्थानों पर हुए हमले लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। लेकिन इस घटना से मीडिया की जवाबदेही का प्रश्न समाप्त नहीं होता। मीडिया को सत्ता से स्वतंत्र रहते हुए जनता के वास्तविक प्रश्नों को सामने लाने, तथ्यों की जांच करने और विभिन्न पक्षों को उचित स्थान देने का प्रयास करना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जन असंतोष को उसकी प्रारंभिक अवस्था में समझना चाहिए। किसी आंदोलन के उग्र हो जाने के बाद केवल प्रशासनिक या पुलिस कार्रवाई से समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सकता। सरकारों को युवाओं, नागरिक समाज, विश्वविद्यालयों, मीडिया और राजनीतिक विपक्ष के साथ निरंतर संवाद की संस्कृति विकसित करनी चाहिए।

निष्कर्ष:

नेपाली जन आक्रोश को केवल एक अचानक घटित राजनीतिक घटना के रूप में देखना उसके वास्तविक महत्व को सीमित करना होगा। इसके पीछे भ्रष्टाचार के प्रति असंतोष, राजनीतिक संरक्षणवाद, आर्थिक अवसरों की कमी, सामाजिक असमानता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से संबंधित चिंता और शासन के प्रति घटता विश्वास जैसे अनेक प्रश्न दिखाई देते हैं। सामाजिक माध्यमों पर प्रतिबंध ने इस असंतोष को तत्काल राजनीतिक अभिव्यक्ति प्रदान की, लेकिन उसकी पृष्ठभूमि इससे कहीं अधिक व्यापक थी। सितंबर 2025 की घटनाओं ने लोकतंत्र के सामने दोहरी चुनौती रखी। एक ओर राज्य को नागरिकों के शांतिपूर्ण विरोध और अभिव्यक्ति के अधिकार की रक्षा करनी थीय दूसरी ओर हिंसा, आगजनी और सार्वजनिक संपत्ति के विनाश से कानून के शासन की रक्षा करना भी आवश्यक था। मानवाधिकार संबंधी जांचों ने सुरक्षा बलों के अत्यधिक बल प्रयोग तथा बाद की हिंसक घटनाओं कृदोनों की जवाबदेही की आवश्यकता पर बल दिया है।

लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति यह है कि वह असहमति को राजनीतिक अभिव्यक्ति का वैध स्थान देता है। इसलिए किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था को जनता की असहमति से भयभीत होने के बजाय उससे संवाद करना चाहिए। संसद, सरकार, प्रशासन, राजनीतिक दल और मीडिया तभी अपनी लोकतांत्रिक भूमिका प्रभावी ढंग से निभा सकते हैं जब वे नागरिकों के प्रश्नों और आकांक्षाओं के प्रति

उत्तरदायी बने रहें। नेपाल की घटना दक्षिण एशिया की लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को यह स्मरण कराती है कि सत्ता परिवर्तन से अधिक महत्वपूर्ण संस्थाओं में नागरिक विश्वास का निर्माण है। लोकतंत्र केवल चुनाव कराने की प्रक्रिया नहीं है, वह नागरिकों को सम्मान, समान अवसर, अधिकार और न्याय उपलब्ध कराने की सतत प्रक्रिया भी है। यदि लोकतांत्रिक संस्थाएं जनता की आकांक्षाओं से जुड़ी रहेंगी तो वे असंतोष को शांतिपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन में परिवर्तित करने की क्षमता रखेंगी।

राष्ट्रवाद, राजनीतिक लोकप्रियता या चुनावी सफलता किसी भी सरकार को दीर्घकालीन वैधता प्रदान करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती। सुशासन, पारदर्शिता, सामाजिक न्याय और आर्थिक अवसर लोकतांत्रिक वैधता के स्थायी आधार हैं। सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग सार्वजनिक हित में, सत्ता का प्रयोग संवैधानिक मर्यादाओं के भीतर और प्रशासन का संचालन नागरिक गरिमा के अनुरूप होना चाहिए। लोकतंत्र की वास्तविक परीक्षा उस समय होती है जब जनता सत्ता से असहमति व्यक्त करती है। लोकतांत्रिक सरकार को आलोचना को शत्रुता के रूप में नहीं बल्कि शासन में सुधार के अवसर के रूप में देखना चाहिए। इसी प्रकार नागरिक समाज और आंदोलनकारी समूहों को भी अपने अधिकारों की मांग करते हुए शांतिपूर्ण और संवैधानिक माध्यमों को प्राथमिकता देनी चाहिए। लोकतंत्र राज्य और नागरिककृदोनों की साझा जिम्मेदारी है।

अतः नेपाली अनुभव का मूल संदेश दक्षिण एशिया की लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के लिए यही है कि जनता की आवाज को असंतोष की चरम अवस्था तक पहुंचने से पहले सुनना लोकतांत्रिक शासन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। लोकतंत्र की रक्षा केवल संसद और संविधान की रक्षा से नहीं होती, उसकी वास्तविक रक्षा उस नागरिक के विश्वास, सम्मान, अधिकार और भविष्य की रक्षा से होती है जिसके नाम पर लोकतांत्रिक व्यवस्था अस्तित्व में आती है।

संदर्भ सूची

1. Hachhethu, K. (2004). The Nepali state and the Maoist insurgency, 1996–2001. In M. Hutt (Ed.), Himalayan people's war: Nepal's Maoist rebellion. Indiana University Press.
2. Human Rights Watch. (2025, September 9). Nepal: Police fire on “Gen Z” protest. Human Rights Watch
3. Human Rights Watch. (2025, November 20). Nepal: Unlawful use of force during “Gen Z” protest. Human Rights Watch.
4. Human Rights Watch. (2026). World report 2026: Nepal. Human Rights Watch.
5. Hutt, M. (Ed.). (2004). Himalayan people's war: Nepal's Maoist rebellion. Indiana University Press.
6. International IDEA. (2024). The global state of democracy 2024: Strengthening the legitimacy and resilience of democracy. International Institute for Democracy and Electoral Assistance.

7. Lawoti, M., & Pahari, A. K. (Eds.). (2010). *The Maoist insurgency in Nepal: Revolution in the twenty-first century*. Routledge.
8. Michaels, A. (2024). *Nepal: A history from the earliest times to the present*. Oxford University Press.
9. Reuters. (2025, September 4). Nepal to block some social media including Facebook. Reuters.
10. Reuters. (2025, September 9). A look at the anti-corruption protests that ended Nepal's social media ban. Reuters.
11. United Nations Development Programme. (2024). *Human development report 2023/2024: Breaking the gridlock: Reimagining cooperation in a polarized world*. United Nations Development Programme.
12. Upreti, B. C. (2008). *Maoists in Nepal: From insurgency to political mainstream*. Gyan Publishing House.
13. World Bank. (2025). *Nepal development update*. World Bank.
14. World Inequality Lab. (2024). *Income and wealth inequality in India, 1922–2023: The rise of the billionaire Raj*. World Inequality Lab.
15. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय. (2018). *दक्षिण एशिया में राजनीति: नेपाल, भूटान और मालदीव*. नई दिल्ली: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय।
16. खरेल, लक्ष्मी प्रसाद. (2022). *नेपाल का संवैधानिक कानून और नेपाली कानूनी प्रणाली*. काठमांडू: खरेल कानूनी सेवा तथा अनुसंधान केंद्र।
17. पोखरेल, त्रिलोचन, एवं सिग्देल, वसंतराज. (2020). *नेपाल की संघीय शासन प्रणाली*. काठमांडू: नेपाल प्रशासनिक स्टाफ कॉलेज।
18. मीणा, राकेश कुमार. (2020). *नेपाल का संवैधानिक विकास*. नई दिल्ली: ओम पब्लिकेशन्स।
19. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (2022). *समकालीन विश्व राजनीति: समकालीन दक्षिण एशिया*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
20. नेपाल सरकार. (2015). *नेपाल का संविधान*. काठमांडू: नेपाल सरकार।
21. उप्रेती, भुवन चंद्र. (2008). *नेपाल में माओवादी: विद्रोह से राजनीतिक मुख्यधारा तक*. नई दिल्ली: ज्ञान पब्लिशिंग हाउस।
22. उप्रेती, विष्णु राज. (2014). *नेपाल की शांति प्रक्रिया और राज्य निर्माण की चुनौतियाँ*. काठमांडू: नेपाल सेंटर फॉर कंटेम्पोरेरी रिसर्च।
23. विश्व असमानता प्रयोगशाला. (2024). *भारत में आय और संपत्ति असमानता, 1922–2023: अरबपति राज का उदय*. विश्व असमानता प्रयोगशाला।